Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

समकालीन हिंदी कविता और राजनीतिक उत्कर्ष (1990-2000)

डॉ. नितिन पाटिल
सहायक अध्यापक,
भाषा विभाग, क्रिस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगलुरू

शोधसार –

बिना राजनीति के समाज में परिवर्तन और साहित्य में क्रांति असंभव है। समकालीन कवियों ने अपने समय की राजनीतिक व्यवस्था को भालिभांति पहचाना है। इन कवियों ने अपने काव्य में राजनीतिक विद्रूपता तथा उससे होने वाले सामान्य मनुष्य के शोषण पर कभी व्यंग्य तो कभी तीखे प्रहार कर समाज में चेतना लाने का प्रयत्न किया है। समकालीन हिंदी कविता का समय भारतीय समाज में कई प्रकार के क्षेत्रीय और राष्ट्रीय राजनीतिक संकटों का समय रहा है। इस काल के कवियों ने समाज को राजनैतिक अर्थमयता तथा समवेत मुक्ति की दिशा दी है। अपने कवि कर्म को पहचानते हुए, समाज के साथ न्याय कर, उसे जागृत करने का प्रयास किया है। समकालीन हिंदी कविता (1990-200) के कालखड़ में राजनीतिक विद्रूपताओं, भारतीय लोकतंत्र, चुनाव के प्रहसन तथा भ्रष्टाचार आदि बातों को विशेष स्थान मिला है। अपने कवि कर्म को पहचानते हुए, समाज के साथ न्याय कर, उसे जागृत करने का प्रयास किया है। समकालीन कवियों ने भारतीय राजनीति में छुपी कूटनीतियों, अवसरवाद, स्वार्थवृत्ति, सत्ता आदि के खेल को व्यंग्यात्मकता के साथ प्रस्तुत कर जनता में चेतना लाने का प्रयास किया है।

बीजशब्द – समकालीन हिंदी कविता, राजनीति, सत्ता, लोकतंत्र, भ्रष्टाचार, विद्रूपता, चुनाव, अवसरवाद, मार्क्सवाद, प्रजातंत्र पर व्यंग्य।

मूल आलेख

विश्व की सबसे प्राचीन और लोकप्रिय विधा कविता के माध्यम से कवि अपने भावों को समाज तक पहुंचाता है। वह शब्दों के द्वारा मनुष्य के मानस-पटल पर विचारों के चित्र अंकित करता है। कवि द्वारा उपस्थित यही चित्र समाज में चेतना के संचारक बनते हैं। काव्य-प्रक्रिया में व्यक्ति की वैयक्तिकता ही नहीं बल्कि उसकी सामाजिकता भी अभिव्यंजित होती है। कवि की दृष्टि वैयक्तिक संवेदना के निज भाव से आगे मानव संवेदना के भिज्ञय-अनभिज्ञय सभी मानवीय पक्षों को उजागर करती है। सदियों से कविता का लक्ष्य मानवता की प्राप्ति रहा है। उच्च कोटी के काव्य सृजन से समाज में चेतना परिव्याप्त होती है। नव जागृती फैलती है। मनुष्य मात्र में मानवीयता की अमिय धारा प्रवाहित होती है। विवेक का यही जागरण भाव मनुष्य मन को सशक्त बनाता है तथा उसे परिस्थितियों से लड़ने की प्रेरणा देता है। समकालीन हिंदी कवियों ने संवेदना के स्तर पर चौकन्नेपन और गहन चिंतन के साथ मानवीयता तथा विवेक की इसी संज्ञा को अपनी कविताओं का प्रमुख लक्ष्य बनाकर समाज में सचेतना प्रवाहित करने का प्रयास किया है। राजनीति, संस्कृति, धर्म, बाजारवाद, भूमंडलीकरण आदि स्तरों पर फैली अराजकता को इंगित करते हुए नये भावबोध और नयी संवेदना का परिचय दिया है।

समकालीन हिंदी कवि जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्मतम यथार्थ की अभिव्यक्ति के कवि हैं। इन्होंने अपनी कविताओं में राजनीति से लेकर सत्ता जगत की प्रत्येक वास्तविकता को शब्दांकित किया है। राजनीतिक क्षेत्र में पलने वाले कुचक्रों, भ्रष्टाचार, अवसरवादिता, चुनाव, लोकतंत्र आदि के विभस्त चेहरे को समाज के सामने लाने का प्रयास किया है। सर्वमान्य है कि समाज, साहित्य और राजनीति

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

तीनों का गहन संबंध है। बिना राजनीति के समाज में परिवर्तन और साहित्य में क्रांति असंभव है। "समकालीन कविता में राजनीतिक संदर्भों, प्रश्नों और घटनाओं का अच्छा ख़ासा जुलूस सक्रिय है। साहित्य और राजनीति पर वर्षों से चल रहे विवाद को एक तरह से साठोत्तरी अथवा समकालीन कवियों ने समाप्त कर दिया है। साहित्य को राजनीति से दूर रखने या राजनीति को साहित्य में अस्पृश्य मानने की बात अब नहीं रही।"[1]

समकालीन हिंदी कविता का समय भारतीय समाज में कई प्रकार के क्षेत्रीय और राष्ट्रीय राजनीतिक संकटों का समय रहा है। इस काल के कवियों ने समाज को राजनैतिक अर्थमयता तथा समवेत मुक्ति की दिशा दी है। सुखवीर सिंह के मतानुसार, "चेतना की दृष्टि से देखें तो समकालीन हिंदी-कविता का मूल स्वर राजनीतिक है। इसमें राजनीति के दबावों को स्वीकार किया गया है। राजनीति के अनैतिक, अमानवीय, क्रूर, स्वार्थ, आतंकमय चरित्र को उजागर किया गया है। मनुष्य की पीड़ा को सामाजिक अर्थ देने के प्रयत्न में यह कविता वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था और स्वार्थ राजनीति से उसके अनैतिक गठजोड़ से उत्पन्न बहुस्तरीय जटिलताओं को उघाड़ते हुए पाठक को चिंतन का अविस्मरणीय अंग बनाने के लिए प्रयत्नशील है।"[2] इस कालखड़ के काव्य में राजनीतिक विद्रूपताओं, भारतीय लोकतंत्र, चुनाव के प्रहसन तथा भ्रष्टाचार आदि बातों को विशेष स्थान मिला है।

भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीयों ने नये संविधान को स्वीकार किया जिसमें सभी को समानता एवं स्वतंत्रता के अधिकार मिले। किन्तु स्वार्थ एवं सत्ता के लालची दलों एवं राजनेताओं ने लगातार अपनी-अपनी सुविधानुसार संविधान का दुरुपयोग किया है। भ्रष्ट नेताओं ने अपने अधिकारों को सुरक्षित रखते हुए सामान्य जन को उसके मूल अधिकारों से वंचित रखा है। जनतंत्र के नाम लोगों को नए-नए आश्वासन देकर वोट बटोरे हैं और चुनाव के बाद जनता को आंख की किरकिरी माना है, उससे मनुष्य की लालसा तथा उसकी स्वतंत्रता एक भारी चट्टान के नीचे दबा अनुभव करती है। समकालीन कवियों की चिंतायें सिर्फ भावुक चिंतायें नहीं हैं, बल्कि अपने समय की सारी विकट परिस्थितियों और सरोकारों की चिंतायें हैं, ताकि भारतीय लोकतंत्र का असली चेहरा जनता के सामने लाया जा सके। कुमार अंबुज अपनी कविता 'भरी हुई बस में लाल सफेवाला आदमी' में सामान्य आदमी के माध्यम से लोकतंत्र के वास्तविक चेहरे को सामने लाने का प्रयास करते हैं। जो सामान्य मनुष्य सारी सुख-सुविधाओं का हकदार है किन्तु जिसे उन सब से दूर रखा जा रहा है। इसी चित्रण करते हुए वे कहते हैं-

"पूछना चाहता है लाल सफेवाला आदमी
जब वोट डालने के लिए चलना पड़ता है
सिर्फ दो मील
तो इलाज करने के लिए बीस मील क्यों?
क्यों नहीं है उसके अपने गाँव में डामर-रोड
और कम से कम एक कंपाउंडर वाला अस्पताल
वह जानना चाहता है इस बस में
जब भरे-पूरे स्वस्थ विधायाक के लिए
सुरक्षित है बैठने के लिए जगह
तो एक बीमार बच्चे
और थके-हारे इंसान के लिए क्यों नहीं?"[3]

भारतीय लोकतंत्र में सामान्य मनुष्य की मूलभूत अधिकारों के साथ अपने विकास की भी अपेक्षा है। वह अपने और सत्ताधारियों के बीच निर्मित अंतर को समझता है और नेताओं की उदासीनता तथा निष्ठुरता पर सवाल करता है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

समकालीन हिंदी कवियों की यह विशेषता रही है कि उन्होंने राजनीति के भयावह चेहरे को समाज के सामने रखा है। अधिकांश राजनेता अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए जनता को जातिवाद, क्षेत्रवाद, धर्म आदि की बातों में फसाकर अपनी कुर्सी को संभाले रखते हैं। अवसरवादिता, भ्रष्टाचार तथा पुलिस प्रशासन के गलत प्रयोगों द्वारा निजी हितों को प्राप्त करने में व्यस्त रहते हैं। नेताओं की स्वार्थनीति तथा भ्रष्टाचार के अंधेरों ने सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक खुशहाली के साथ मनुष्य की आंतरिक संवेदना तक को झकझोर दिया है। राजनीतिक विद्रूपता के वर्णन के माध्यम से समकालीन कवि व्यक्ति संवेदना को स्पर्श करते हुए अनेक सवाल उठाते हैं। कुमार विकल अपनी कविता 'खौफनाक समय के बच्चे' में कहते हैं-

"वे जानना चाहते है
लोकल बस में
जिस अंकल के प्लास्टिक डिब्बे में
दो सूखी रोटियाँ
और थोड़ा-सा अचार था
उसकी पुलिस ने तलाशी क्यों ली
पुलिस ने उसे क्यों पीटा
क्यों मारा....."[4]

राजनीति के इस विद्रुप चेहरे ने सामान्य मनुष्य के जीवन को भयग्रस्त बना दिया है। वह स्वयं को कहीं भी सुरक्षित महसूस नहीं करता। वास्तव में अनिश्चित्ता उसके जीवन की पर्याय बन गयी है। हालांकि साहस और निर्भीकता में ही मानवता की जय पहचानी जाती है किन्तु वास्तविक स्थिति इसके ठीक विपरीत है। सत्ता की क्रूरता से समाज में खौफ और भय का वातावरण निर्मित है। इसी खौफ और भय की चिंता को समकालीन कवि असमंजस में मिलाकर और तीखा कर देता है। अशोक वाजपेयी लिखते हैं-

"जब लगता है कि आधी रात को
दरवाजे पर दस्तक देगा वर्दीधारी
किसी न किए गए जुर्म के लिए लेने तलाशी
तब अंधेरे में पालतू बिल्ली की तरह
कोने में दुबकी रहती है उम्मीद
यह सोचते हुए कि बाहर सिर्फ हवा हो
शायद।"[5]

असल में, समकालीन कवियों ने अपने समय की राजनीतिक व्यवस्था को भालिभांति पहचाना है। इन कवियों ने अपने काव्य में राजनीतिक विद्रूपता तथा उससे होने वाले सामान्य मनुष्य के शोषण पर कभी व्यंग्य तो कभी तीखे प्रहार कर समाज में चेतना लाने का प्रयत्न किया है। अपने कवि कर्म को पहचानते हुए, समाज के साथ न्याय कर, उसे जागृत करने का प्रयास किया है।

जनतंत्र में शासन के चालक जनता के प्रतिनिधि होते हैं इसीलिए किसी भी जनतांत्रिक व्यवस्था में मतदान और मताधिकार दोनों अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। प्रलोभनों से दूर और सुरक्षित वातावरण में मतदान उज्ज्वल भविष्य की आशा देता है। भारतीय जनतंत्र में चुनाव का दौर हर पाँच साल के बाद एक उत्सव की तरह आता है, जिसमें अपनी सूझ-बूझ का प्रयोग करते हुए जनता योग्य दल को वोट देकर, अपने लिए योग्य प्रशासन का चुनाव करने का प्रयास करती है। समकालीन कविता चुनाव, मतदाताओं की भीड़ और संसद आदि की कविता है। इन कवियों ने चुनाव के समय विभिन्न दलों एवं पार्टियों द्वारा किए जाने वाले विभिन्न कार्य-कलापों को परत-

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

दर-परत कविता में अभिव्यक्ति किया है। चुनाव के समय जनता को आकर्षित करने या कहें भरमाने हेतु बनाए गए आकर्षक घोषणा पत्रों से लेकर पार्टी का टिकट पाने की होड़ तथा चुनाव में उम्मीद्वारों की निकलती रैलियों और जुलूसों आदि को चुनावी प्रहसन के रूप में प्रस्तुत किया है। पार्टी से टिकट प्राप्ति के लिए प्रतिभागियों द्वारा क्षेत्र, धर्म और आर्थिक स्थिति को भुनाने की चतुराई पर टिप्पणियां की हैं। चुनावों में छोटे-बड़े पूँजीपतियों द्वारा प्रत्याशीयों और राजनैतिक पार्टियों को दी जाने वाली आर्थिक और अन्य प्रकार की सहायता के समीकरणों को व्यक्त किया है। जीत के पश्चात उम्मीदवारों के बदले स्वभाव और पूँजीपतियों के हित में उनके बदले स्वर की चर्चा की है। लुभावने आश्वासनों और प्रभावी नारों में जनता को फुसलाकर वोट पाने की कुटिलता का खुलासा किया है। कुमार विकल ने इस सारे चुनावी प्रहसन पर बच्चों के सवालों के हवाले से लिखा है-

"बच्चे तो हमेशा
नये-नये सवाल पूछते जायेंगे
जैसे
मछलियाँ चश्मे क्यों नहीं पहनलेती
ताकि मछेरों को देख पाये
और उनके जालों से भाग जाये"[6]

यहां चश्में जनता द्वारा विवेक से काम देने और राजनैतिक बहकाव को पहचान लेने के अर्थ में है। समकालीन कवियों ने चुनाव के समय घटित होने वाली हर छोटी-बड़ी बात को अभिव्यक्त कर समाज को समय-समय पर सजग, सचेत करने का प्रयास किया है। चुनाव के समय दिए जानेवाले प्रलोभनों और उससे होने वाले नुकसान से ये कवि भली-भांति परिचित हैं और इसी का भान वे आम आदमी को कराना चाहते है।

स्वतंत्रता के पश्चात भी भारत की राजनीतिक परिस्थितियों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। प्रजातंत्र के नाम पर जनता को दिखाए गए सुनहरे सपने आज पूर्णतः चकनाचूर होते नजर आ रहे हैं। किसी भी जनतांत्रिक व्यवस्था में व्यक्ति को अपने विचार प्रस्तुत करने का अधिकार होता है, किन्तु यहाँ यदि कोई व्यक्ति किसी राजनेता या किसी दल के विरोध में बोलता है तो उसे डराया, धमकाया या सताया जाता है। भारत कहने भर को विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र है। वास्तव में यहाँ के सत्तासीन राजनेता या शासन-कर्ता किसी भी प्रजातांत्रिक कर्म का सही अर्थों में समर्थन नहीं करते हैं। प्रजातंत्र में जहाँ शांति और सौहार्दपूर्ण वातावरण की बात की जाती है वहीं यहाँ सांप्रदायिकता और असंतोष राजनीति की आन्तरिक धड़कन की तरह कार्य करते हैं।

हिंदी कवियों ने बदलती परिस्थितियों को गहराई से समझा और परखा है। उन्होंने राजनीति की हर चाल को ताड़ पर व्यंग्य बाणों से प्रहार किए हैं। वास्तव में दशम दशक का राजनीतिक क्षेत्र अनेक प्रकार के उतार-चढ़ावों का साक्षी रहा है। कल तक अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले नेता सत्ता के स्वार्थ में हिंसा पर उतर आए हैं। महँगाई के इस दौर में जहाँ देश की आधी आबादी एक वक्त का खाना नहीं जुटा पाती वहा जनता को धैर्य का पाठ पढ़ाया जाता है। जो कोई भ्रष्टाचार के विरूध्द आवाज उठता है, उसकी आवाज दबा दी जाती है। सुरक्षा के नाम पर स्वतंत्रता का हनन सामान्य हो गया है। ऐसे में, क्या यह वही प्रजातंत्र है, जिसका सपना हमने आजादी के समय देखा था? आज यह प्रश्न हर भारतवासी की जबान पर है। आलोकधन्वा चिड़ियाघर के गेंडे के माध्यम से भारतीय राजनीति पर प्रहार करते हुए लिखते हैं-

"कलकत्ते के जू में गैंडे ने मुझसे कहा
कि अभी स्वतंत्रता कही नहीं है सब कहीं सुरक्षा है
राजधानी के सबसे बड़े सुरक्षित हिस्से में

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

पाला जाता है एक आदिम घाव
जो पैदा करता है जंगली बिल्लियों के सहारे पाश्विक अलगाव
तब गैंडे कि कठिन चमड़ी का उपयोग युध्द के लिए नहीं
बल्कि एक अपार करुणा के लिए होना चाहिए।"[7]

समकालीन कवियों ने भारतीय राजनीति में छुपी कूटनीतियों, अवसरवाद, स्वार्थवृत्ति, सत्ता आदि के खेल को व्यंग्यात्मकता के साथ प्रस्तुत कर जनता में चेतना लाने का प्रयास किया है।

भारतीय समाज तथा राजनीति के क्षेत्र में भ्रष्टाचार दीमक की तरह फैलकर संपूर्ण समाज के साथ जीवन के हर क्षेत्र को दूषित बना रहा है। आज का मनुष्य अपने वैयक्तिक स्वार्थ तथा लालच के लिए बेझिझक भ्रष्टाचार की ओर प्रवृत्त है। डॉ. दिनेशचन्द्र वर्मा ने इस स्थिति को प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि "भ्रष्टाचार आज समाज की एक स्वीकृत स्थिति बन गयी है। आज कोई भी ऐसा सरकारी या गैर-सरकारी कार्यालय या विभाग नहीं है जिसमें घुसखोरी न चलती हो। सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में परिव्याप्त यह रोग इतना असहाय्य हो गया है कि अनेक व्यवस्थाएं, कानून और प्रतिबंध लागू किए जाने के बावजूद यह दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है।"[8] हिंदी साहित्य के क्षेत्र में भ्रष्टाचार का विरोध पूर्वापर से चला आ रहा है। समकालीन हिंदी कविता के क्षेत्र में यह विरोध तीव्र रूप में दृष्टिगत होता है। सरकार द्वारा जनता के लिए जिन भी योजनाओं का आयोजन किया जाता है, वही योजनाएं भ्रष्ट राजनेताओं की स्वार्थवृति के चलते जेबे गरम करने का उपादान बन जाती हैं। भ्रष्टाचार के इस खेल में आम-आदमी, मजदूर, किसानों के साथ-साथ उन सभी का शोषण हो रहा है जो सरकार और राजनेताओं से आस लगाए बैठे हैं। इस संदर्भ में मदन कश्यप कहते हैं-

"माँ नहीं जानती, पंडितजी जिसके दरवाजे पाँव
रखते हैं, केवल उसी की पाकिट खाली करते हैं।
परन्तु, ये जब एक बार लाल फीता काटते हैं
तब, पूरे देश भर के निर्धन लोगों की जर्जर
जेंबे कट जाती हैं।"[9]

1990 से 2000 का कालखंड में देश अनेक घोटालों का साक्षी रहा। बोफ़ोर्स कांड ने भारत की रक्षा नीति को भी भ्रष्टाचार की चपेट में लिया। विभिन्न आपदाओं के समय मदद का हवाला देकर जनता से की गई अपील में केंद्र तथा राज्य सरकारों के कोषों में जमा होने वाला धन राजनेताओं, उच्च अधिकारियों, बाबू/क्लर्कों का जेबों में समा गया। कोष से निकली मदद अधिकारियों में बटते-बटते, जरूरतमंदों के पास पहुंचने से पहले ही ख़त्म हो गई। जिसे देखकर जयप्रकाश कर्दम कहते हैं-

"आओ, नया भारत बनाएं
ऐसा भारत जहां बेकारी हो
भुखमरी हो, लाचारी हो
ऊंच-नीच और छुआछात की बीमारी हो
जहां भ्रष्टाचार का साम्राज्य हो
ईमानदारी और नैतिकता त्याज्य हो
इंसानियत की निर्मम हत्या
हैवानियत का नंगा नाच हो
जहां सच बोलना जुर्म हो

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

न्याय की कोताही हो
अभिव्यक्ति की आजादी न हो
सोचने की मनाही हो"[10]

समकालीन कवियों ने इस सारी अराजकता का यथार्थ वर्णन कर भ्रष्टाचार का प्रखर शब्दों में विरोध किया है।

हिंदी साहित्य में मार्क्स के विचारों को लेकर बहुत-सा साहित्य लिखा गया है। जहाँ कुछ रचनाकारों ने इसके समर्थन में लिखा है, वही कुछ अन्य रचनाकार इसके विरोध में खड़े दिखाई देते रहे हैं। समकालीन कविता मूलतः मध्यमवर्ग, मजदुर, शोषित और किसानों की वापसी कविता है। जहाँ पूँजीपतियों द्वारा शोषण होता है, वही समकालीन कवि क्रांति की मशाल जलाकर चेतना लाने का प्रयास करता है। शतक के अंतिम दशक में सोवियत संघ के विघटन के बाद कम्युनिस्ट विचारवादियों का मोहभंग हो गया था। इस मोहभंग की प्रतिकृति कविता में भी नजर आती है। वे कहते हैं-

"जो हमने किया सब व्यर्थ गया
ऐसा न कहिए कामरेड-
बरसों बरस सैकड़ों फीट ड्रिलिंग के बाद अचानक
तेल खुदाई इंजीनियर को लगता हैं
यहाँ इस मिट्टी में नहीं है तेल
तो क्या हुआ
फिर कहीं और हम सूंघेंगे मिट्टी"[11]

कुछ कवियों ने अपनी कविताओं का मार्ग परिवर्तित कर उसे प्रकृति, समाज, जनजीवन आदि के साथ जोड़ा दिया है। इस समय के कवियों में मार्क्स का समर्थन तथा विरोध एक ही धरातल पर हुआ है। सत्यपाल सहगल जैसे कवि मार्क्स के संदर्भ में कहते हैं-

"मर साले भूक्कड़ गमजदा मनहूस चेहरे
मुझे मार्क्स ने वरगलाया था
मैं तो बचपन से पढ़ाई लिखाई में होशियार था
निर्धन घर में जन्म लेने पर भी"[12]

वहीं आलोकधन्वा जैस कवियों की हर रचना में मार्क्सवादी विचारधारा की अभिव्यक्ति मिलती है। असल में समकालीन कवि क्रांति में विश्वास रखते हैं और इस क्रांति के लिए जिस चेतना की आवश्यकता होती है वह विचारों की संपन्नता से ही मिलती है। अतः इन कवियों ने कम्युनिस्ट विचारों से चेतना को जागृत कर क्रांति की बात कही है, जो इनकी रचनाओं में भी प्रत्यक्ष-परोक्ष ढंग से दृष्टिगत होती है।

1990 से 2000 का दौर आर्थिक और औद्योगिक उदारीकरण का दौर रहा है। सरकार की आर्थिक नीतियों से अधिकतर लाभ पूंजीपतियों को मिला क्योंकि इन्हीं पूंजीपतियों ने अपनी पूँजी के बल पर सरकार को शिकंजे में बाँधा हुआ था। चुनाव तथा अन्य कार्यों में राजनीतिक दलों एवं नेताओं को खुले हाथ से मदद करने वाले उद्योगपति सरकार बनने के बाद अपना उल्लू सीधा करने में लगे थे। सरकार द्वारा निकलने वाले बड़े टेंडरों से लेकर जीवनाश्यक वस्तुओं तक के लायसेंस केवल पूँजीपतियों को ही प्राप्त हो रहे थे। जिससे ये जीवनावश्यक वस्तुओं की जमाखोरी में व्यस्त थे और बाजार में मंदी का वातावरण पसरा हुआ था। गरीब आदमी, संर्घषशील किसान और मजदूर दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएं तक दूगने तीगुने दामों पर खरीदने के लिए विवश थे। पूंजीपतियों के प्रति कहते हैं-

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

"थर्र काँपता था पूरा इलाक़ा
दरोगा से मंत्री तक सब उसके जूते की गन्ध से पाते थे होश
बिना मुँडेर वाली छत से वह दिन भर मूतता रहता
आते जाते किसी भी आदमी के सिर पर खल खल
ऐसा प्रताप था उसका"[13]

समकालीन कवियों ने ऐसी स्थितियों तथा वातावरण को जन्म देनेवाली सरकार तथा पूँजीपतियों के विरुद्ध अपनी कविताओं में प्रखर तथा विरोधात्मक रूप में आवाज उठाई है।

"मज़दूर मेहनत करने के लिए हों
सिर्फ़ मेहनत
पूंजीपति हों मेहनत की जमा पूंजी के
मालिक बन जाने के लिए
यानि, जो हो जैसा हो वैसा ही रहे
कोई परिवर्तन न हो
मालिक हों
ग़ुलाम हों
ग़ुलाम बनाने के लिए युद्ध हो
युद्ध के लिए फ़ौज हो
फ़ौज के लिए फिर युद्ध हो"[14]

समकालीन कवियों ने समाज में व्याप्त राजनीतिक विद्रूपताओं, भ्रष्टाचार, जनतंत्र की वास्तविकता, और पूंजीवाद के दुष्प्रभावों को अपने काव्य में उकेरा है। इन कविताओं के माध्यम से कवि समाज को सचेत और जागरूक बनाने का प्रयास करते हैं, साथ ही जनमानस में आक्रोश और संवेदनशीलता को भी जगाते हैं। समकालीन कवियों ने समाज में व्याप्त राजनीतिक विद्रूपताओं, भ्रष्टाचार, जनतंत्र की वास्तविकता, और पूंजीवाद के दुष्प्रभावों को अपने काव्य के माध्यम से प्रस्तुत कर समाज को सचेत और जागरूक बनाने का प्रयास करते हैं, साथ ही जनमानस में आक्रोश और संवेदनशीलता को भी जगाते हैं।

संदर्भ :

1) कुमार कृष्ण - समकालीन हिंदी कविता का बीजगणित, पृ. सं. 23 (उद्धरित)
2) वही, पृ. सं. 25 (उद्धरित)
3) कुमार अंबुज - किवाड़, पृ. सं. 35, 36
4) कुमार विकल - निरूपमा दत्त मैं बहुत उदास हूँ, पृ. सं. 13, 14
5) अशोक वाजपेयी - अभी कुछ और, पृ. सं. 15
6) कुमार विकल - निरूपमा दत्त मै बहुत उदास हूँ, पृ. सं. 13
7) आलोकधन्व - दुनिया रोज बनती है, पृ. सं. 32
8) दिनेशचन्द्र वर्मा - स्वातंत्रोत्तर हिंदी नाटक : समस्या और समाधान, पृ. सं. 100

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(3), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

9) मदन कश्यप - लेकिन उदास हैं पृथ्वी पृ. सं. 52
10) जयप्रकाश कर्दम - http://kavitakosh.org/kk/नया_भारत_बनाएँ_/_जयप्रकाश_कर्दम
11) अरुण कमल - नये इयलके में, पृ. सं. 79
12) सत्यपाल सहगल - कई चीजे, पृ. सं. 46
13) अरुण कमल - नये इलाक़े में पृ. सं. 64
14) गोरख पाण्डेय - जागते रहो सोने वालो, पृ. सं. 53